सं. भो. वि./सोनी/174-87/48405.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ग्राईपों लेगोरेट्रीज ई/33, इण्डस्ट्रीयल एरिया सोनीयत के श्रमिक श्री नन्द किशोर, पुत्र श्री जगदीश सैनी मूरयल रोड़, नजदीक भगवत श्राश्रम सोनीयत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यशाल विवाद। को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांखनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रन्न, ग्रीबोगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा ग्रिवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त वा उससे सुसंगत या उससे सन्वन्धित नीचे जिल्ला मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं को कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो त्रिवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री नन्द किशोर को सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हिकदार

दिनांक 3 दिसम्बर, 1987

सं• भो• वि•/रोह/177-87/48412 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में॰ सैटरमैक्स परमेंस्टीकल आ॰ लि॰, एम॰ आई॰ ई॰ वहादुरण जिला रोहतक के श्रमिक श्री मिथलेश प्रसाद मार्फत एच॰ एन॰ जी॰ मजदूर यूनियन बहादुरणढ़ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वास्त्रनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्थर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवाद- अस्त^{्र} या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि; उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री मियलेश प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विदाद को स्पायनिर्गय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौबोगिक विवाद ग्रिशिवयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुनंगत या उससे संबंधित तोवे लिखा मामला न्यायिनगंग एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते ह जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री राकेश की मेवस्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ब्रो॰वि॰/रोह/176-87/48426 — बूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राप है कि मैं॰ सैटर मैक्स फार्मास्पूटीकन प्रा॰ वि॰, एम प्राई० ई० बहादुरगढ़ जिला रोहतक के श्रमिक श्री सुरेन्द्र कुमार, मार्फत एच. एम. जी. मजदूर यूनियन बहादुरगढ़, जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई। श्रीद्योगिक विवाद है;

धीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिध्ट करना चांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौदयोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रधान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक्त के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री सुरेन्द्र कुमार की सेवाश्रों का समापन व्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 10 दिसम्बर, 1987

सं श्रो वि | पानी | 89-85 | 49270 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कार्यकारी श्रीभयन्ता, सब-अरबन डिविजन, अरबन इस्टेट, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, करनाल, के श्रीमिक श्री रामधारी, पूल चूनी लाल मार्फत भारतीय मजदूर संघ, पानी यत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, भव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीवित्यम, 1947 की घारा 10 की उप-घारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भ्रीवसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 सप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रीवसूचना की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत भयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रामधारी की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहतका हकदार है ?

सं भो वि |पानी | 137-87 | 49277 — चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं बजरंग विविध इण्डस्ट्रीज, कटारिया कालोनों, पानीयत, के श्रमिक श्री सतबीर सिंह, पुत्र श्री चन्दगी राम, मार्फत कर्ण सिंह मकान नं 134, वीवर्ज कालोनी, पानीपत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई मीद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविब्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947 की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रशेग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं0 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 भर्मेल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, भ्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धिस नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद में सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला हैं :—

नया श्री सतबीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

> न्नार० एस० न्नग्रवाल, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।